थोड़ा झुक जाओ भोलेनाथ.....

थोड़ा झुक जाओ भोलेनाथ, झुकणों पड़सी जी।
थोड़ा नीव जावो भोलेनाथ, झुकणों पड़सी जी।।

म्हारी गवरा है छोटी, थे तो डींगा घणा भोलेनाथ
झुकणों पड़सी जी... ।। 1 ।।

म्हारी गवरा है भोली, थे चतुरा सिरदार
झुकणों पड़सी जी... ।। 2 ।।

म्हारी गवरा है गौरी, थोरो श्याम वर्ण भोलेनाथ।
झुकणों पड़सी जी... ।। 3 ।।

जयमाला लीवी हाथ में, म्हारी गवरा ने पेराय।
झुकणों पड़सी जी... ।। 4 ।।

हिमाचल री नारीयां, वे तो हिल–मिल मंगल गाए।
झुकणों पड़सी जी... ।। 5 ।।

दूर खड़ा ब्रह्माजी देखे, वे तो टेडी–टेडी नज़र निहारे।
झुकणों पड़सी जी... ।। 6 ।।

देखत–देखत झुक गया, ऐसो तीन त्रिलोकी रा नाथ।
झुकणों पड़सी जी... ।। 7 ।।

जयमाला पहना दीवी, थे तो हरियो सारो सार।
झुकणों पड़सी जी... ।। 8 ।।

निज स्वारथ के कारने, सेव करे संसार।
बिन स्वारथ भक्ति करे, सो भावे करतार।।